1 समाजशास्त्र परिचय (अर्थ, क्षेत्र एवं प्रकृति)

➢ समाजशास्त्र का अर्थ :–

- समाजशास्त्र सामान्य रूप में समाज का अध्ययन है, सामाजिक क्रिया, सामाजिक अंतःक्रिया, सामाजिक मूल्यों या सामाजिक संबंधों का समग्र रूप से अध्ययन करने वाला विज्ञान है।
  सामाजशास्त्र दो शब्दों से बना है:–

  सोसियस + लोगस
  (लेटिन) (ग्रीक)
  समाज + शास्त्र (समाज के शास्त्र || समाज का विज्ञान)

➢ इनके अध्ययन की आवश्यकता क्यों पड़ी ?

- समाज पहले अपरिवर्तनशील था, समाज बदलता नहीं या इसलिए इसे समझने की आवश्यकता नहीं पड़ी
- 18वीं शताब्दि में इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति हुई, नगरीकरण हुआ, पहली बार उद्योग लगे, बड़ी मात्रा में उत्पादन हुआ, समाज बदलने लगा, परिवर्तन होने लगा वो अतितीव्र और व्यापक था जिसके कारण व्यक्तियों के संबंध उनकी अंतक्रियाएं प्रभावित हुई।
- व्यक्ति जानना चाहता था कि –
  1. ये परिवर्तन क्यों हो रहा है?
  2. इसका स्वरूप क्या है?
  3. इसका भविष्य क्या है?

➢ परिभाषा :–

- समाज में होने वाले अतँ क्रियाओं, घटनाओं, संबंधों एवं उसमें होने वाले परिवर्तनों के अध्यन के लिए समाजशास्त्र की उत्पत्ति हुई
- समाजशास्त्र की उत्पत्ति प्रसिद्ध फ्रांसीसी समाजशास्त्री आगस्त काम्ट (1838) (समाजशास्त्र के पितामह) के द्वारा की गई।
- **अन्य समाज शास्त्री** :–
  - ✓ **इमाइल दुर्खीम** – आधुनिक समाजशास्त्र का पितामाह
  - ✓ **वार्ड**
  - ✓ **मैकाइवर तथा पेंज**
  - ✓ **मैक्स वेबर**
  - ✓ **गिन्सबर्ग**
  - ✓ **कार्ल माक्स**

समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र

➢ **स्वरूपात्मक सम्प्रदाय / विशिष्टात्मक सम्प्रदाय :–**

- इस सम्प्रदाय के समर्थक समाजशास्त्र को एक विज्ञान के रूप में देखते है।
- समाज के सभी प्रकार के सामाजिक संबंधों का अध्ययन न करके इस संबंधों के विशिष्ट स्वरूपों का अध्ययन किया जाता है।
- इस सम्प्रदाय के समर्थकों का मानना है कि यदि समाजशास्त्र के अंतर्गत संपूर्ण समाज का अध्ययन किया जाता है तो उसका यथार्थ निष्कर्ष प्राप्त करने में असुविधा होगी।
- समाजशास्त्र को अन्य सामाजि विज्ञानों की तुलना में एक विशिष्ट, पृथक, शुद्ध और स्वतंत्र मानते है।
  समर्थक – मैक्स वेबर, टॉनीज, जार्ज सिमेल

➢ **समन्वयात्मक संप्रदाय :–**

- जब ज्यादा ईकाई हो तो समन्वय होता है।
- इस सम्प्रदाय के समर्थकों का मानना है कि समाज के संबंध में संपूर्ण जान प्राप्त करने के लिए समाजशास्त्र के क्षेत्र को सामाजिक संबंधों के स्वरूप तक सीमित नहीं रखना चाहिए बल्कि संपूर्ण समाज का सामान्य अध्ययन करना चाहिए।
- यह सम्प्रदाय समाजशास्त्र को एक विशिष्ट विज्ञान बनाने के बजाय एक सामान्य विज्ञान को मानता है।
  समर्थक – सोरोकिन, दुर्खीम, हॉबहाउस
- किसी भी विषय की प्रकृति से आशय वह विज्ञान का विषय है अथवा नहीं का अध्ययन करना।

समाजशास्त्र की प्रकृति (स्वभाव)

समाजशास्त्र एक विज्ञान है

➢ **कुछ विज्ञान का विशय मानते है :–**
तर्क :–

- घटनाओं का वैज्ञानिक अध्ययन होता है।
  जैसे – साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली
- तथ्यों का वर्गीकरण (पृथ्यात्मक अध्ययन) किया जाता है।
- कार्य–कारण की वाख्या करता है।
  (कार्य के साथ कारण तलाशता है)
- सिद्धांत प्रममाणिक होते है।
  (परीक्षण व पुनः परीक्षण होता है)
- भविष्यवाणी करने की क्षमता है
  जैसे विज्ञान में होता है।
- वस्तुनिष्ठाता पायी जाती है।
  क्या है का विशेषलण न की क्या होना चाहिए
- संशयवादिता हैं
  ज्ञान को सत्य न मानकर उसमें संशय किया जताा है।
- निरंतरता का गुण पाया जाता है।
  नए तथ्य जुड़ते जाते है।
- सिद्धांत सार्वभमिक है।
  सभी देश या काल में लागू होता है।

समाजशास्त्र एक विज्ञान नहीं है।

➢ **कुछ विज्ञान का विषय नहीं मानते**
तर्क :–

- संबंध एवं व्यवहार परिवर्तनशील होता है जो कि समाजशास्त्र के अध्ययन में बाधक है।
- प्रायोगिक अध्ययन प्रयोगशाला के माध्यम से संभव नहीं है जैसे – भौतिकशास्त्र
- इसमें वस्तुनिष्ठता का अभाव होता है।
  (समाजशास्त्र जिनका अध्ययन करताह ै वह भी उसका अंग है)
- सामाजिक घटनाओं की प्रकृति अत्यंत गतिशील है।
- विषय–सामाग्री को मापने की असमर्थता होता है।
  जैसे– भौतिकशास्त्र में यंत्रों की सहायता लेते है।
- यथार्थ नहीं है। समाज की विषयवस्तु समाज के साथ बदलता है।

समाजशास्त्र की उपयोगिता एवं महत्व

➢ भारतीय समाज विविधातायुक्त समाज है जिसमें धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिकम विविधाएं है, समाज में परम्परावादी मूल्य बने हुए है वही शहरी समाज में आधुनिक मूल्य भी स्वीकार्य किये गये है।

समाजशास्त्र निम्नांकित रूप से उपयोगी है।

1. सामाजिक समस्योओं के निराकरण में
उदाहरण :– भ्रष्टाचार, भिक्षावृत्ति, वेश्वावृत्ति, जातिवाद, बेकारी, गरीबी बाल अपराध ग्रामीणों की समस्याएं

2. आर्थिक विकास के क्रियान्वयन में सहायक
- ✓ विकास कार्यक्रामें में सफल क्रियान्वयन तथा समय–समय पर उसके मूल्यांकन के लिए

3. नई परिस्थितियों से संमजन करने में सहायक
- ✓ यह परिवर्तनशील यु है
- ✓ वर्तमान परिस्थिति के विश्लेषण के आधार पर समाजशास्त्र भविष्य की परिस्थिति का एक स्वरूप पैदा करता है।

4. राष्ट्रीय एकता में सहायक
- ✓ विभिन्नताओं वाला हमारा देश है।
- ✓ देश में हो रहे आंदोलन, दंगे का वैज्ञानिक अध्ययन करके जानकारी जुटायी जा सकती है और उनका हल निकाला जा सकता है।
  उदाहरण – किसान आंदोलन

5. मानव समाज के बारे में वैाानिक ज्ञान प्रदान करने में सहायक
- ✓ समाज की आवश्यकता के अनुसार ज्ञान का संकलन किया जा सकता है।

6. समाज में सहअस्तित्व की भावना का प्रसार
- ✓ किसी एक प्रजाति को अन्य प्रजातियों से श्रेष्ठ या हीन नहीं माना जा सकता।

7. ग्रामीण उत्थान सहायक
- ✓ ग्रामीण जन स्वास्थ्य, निरक्षरता, भूमि दोनो की समस्याएं तेजी से बढ़ती आबादी आदि।

8. जनजातियों की समस्याओं को हल करने में उपयोगी
- ✓ उनकी समस्याओं की प्रकृति को समझ कर समाजशास्त्री विश्लेषण के द्वारा हल किया जा सकता है।

9. पारिवारिक जीवन को सफल बनाने में सहायक
- ✓ वर्तमान में पारिवारिक नियमों, आदर्शी एवं मूल्यों में परिर्वन आ रहा है, उनको समझना जरूरी है।

10. समाजशास्त्र को सफल बनाने में समाजशास्त्र का योगदान
- ✓ मानव जाति के बीच ऊँच–नीच की दीवार को समाप्त करता है क्योंकि समाजशास्त्र यह मानकर चलता है कि उपर्युक्त सभी भेदभाव मानव निर्मित है।